"आत्मनिर्भरता की ओर"

Every Step Towards Self-Reliance

April to June, 2026

"आत्मनिर्भरता की ओर" (Towards Self Reliance) is our quarterly newsletter. In every issue we bring you stories straight from the field. Some are small moments that made someone's day. Some are big wins we are proud to share. This time you will read about a child who could barely read a sentence six months ago, and about a fellow who did not give up on her. You will also find out how many more schools we reached this quarter, and what is next for SRI. Turn the page, we think you will want to know how the story ends.

OUR IMPACT IN NUMBERS (2026-27)

12000+	124	1860	70	12
Students Onboarded	Fellows Onboarded	Teachers Onboarded	Districts Included	States Operational

OUR IMPACT ACROSS PROGRAMS (2026-27)

70
Districts reached

12,000+
Total students reached

1,984
Fellows & teachers engaged

Nanhe Kalam Fellowship

2,250	Total students
124	Fellows
21	Districts

Dronacharya

3,240	Total students
630	Govt. teachers
17	Districts

Saajhedari

6,560	Total students
12	Partner organisations
1,230	Govt. teachers
40	Districts

Our integrated model combines fellows, teachers, and strategic partnerships to deliver measurable impact across India's public education system.

MEET OUR NEWEST NANHE KALAM FELLOWS

Every dream deserves a flight, towards the sky, towards a new light.

We inducted 124 Nanhe Kalam Fellows who will be placed in 62 schools of Haryana, who will be supporting 2,224 students for the next two years and prepare them for residential school exams along with improving their learning levels. In addition they will be closely working with the school teachers and the communtiy holistically improving the learning environment of the students.

FROM 3 DISTRICTS TO 13: UTTARAKHAND SAYS YES

We signed an MoU with the Uttarakhand Government to expand Dronacharya Program across all 13 districts and 520 schools in the state, which will be supporting 2600 students of Uttarakhand. Since launching in 2021 in Almora and Nainital, and expanding to Haridwar, the program has reached 165 government schools across 3 districts, engaging 1,306 under-resourced students. Through structured teacher training, academic resource distribution, and rigorous assessments, 89 students have so far qualified for premier residential schools like JNV, RGNV, HimJyoti, and Vidyagyan. This partnership marks a defining step in our journey, moving from a district-level intervention to a state-wide movement, and bringing the Dronacharya Model's structured, data-driven approach to thousands more children across Uttarakhand.

1300+ STUDENTS SELECTED FOR EKLAVYA MODEL RESIDENTIAL SCHOOL

- With the release of the second EMRS (Eklavya Model Residential School) selection list, our total number of selected students has now crossed 1,300 as a result of SRI's last year's intervention.

- This quarter, SRI signed MoUs with 2 new NGO partners, Prajayatna and Mera Gaon Meri Duniya strengthening our on-ground presence and expanding our collaborative network.

- In partnership with Parivaar NGO, SRI trained over 1,100 teachers through a structured 9-day training batch to strengthen classroom delivery and equip teachers with the tools to improve learning outcomes.

WINS WORTH CELEBRATING

New Partnership with NTPC: Piloting Across 6 States, 30 Fellowship Centres

This quarter, we launched a new pilot partnership with NTPC, integrating our program with their flagship CSR initiative GEM (Girl Empowerment Mission). The pilot currently spans **6 states and 9 districts, covering 10 NTPC plant locations, with 3 Fellowship Centres set up per location, a total of 30 Fellowship Centres, reaching 1,200 students.**
As a pilot, the intention is to scale based on the impact we're able to demonstrate on the ground, building on NTPC's continued commitment to girls' empowerment and education through GEM, and SRI's mobility-focused, education-to-opportunity model.

Welcoming 21 new members

This quarter we **grew from a team of 15 to a bustling team of 36 members,** which will now cater to our expanding states and districts.

Three of our members joined the central team, eighteen members joined the operations team.

WHERE WE SHOWED UP THIS QUARTER

Orientation & Interaction Session with JNV Cohort, Nuh, Jhajjar & Rewari

Getting selected into Jawahar Navodaya Vidyalaya is a remarkable achievement, but for many students, it's also the beginning of a new journey, a new school, hostel life, and new expectations. SRI conducted an Orientation & Interaction Session with its JNV-selected cohort and their parents from Jhajjar, Rewari, Palwal and Gurugram where 44 students and families shared their excitement, questions, and aspirations.

Sahyog 2026: Advancing Impact Through Partnership

Self-Reliant India attended Sahyog 2026, a two-day gathering bringing together DCM Shriram Foundation teams, implementation partners, and sector experts to strengthen collaboration and align around a shared vision for impact. Sessions covered implementation frameworks and data-driven programme delivery, alongside team-building exercises and reflective conversations on the values driving social sector work.

Recognized as Best NGO in Education at CSR & Sustainability Connect Summit

Self-Reliant India was honoured with the Best NGO for Education award at the CSR & Sustainability Connect Summit, held on 22nd May at the Constitution Club of India. The recognition celebrates the work of SRI and stands as a reflection of everyone who has contributed to this journey. Surender Yadav and Divyani received the award on behalf of the organisation.

VOICES FROM THE FIELD

मनीष की कहानी: जुनून और जीत

मनीष एक सरकारी स्कूल का होनहार विद्यार्थी था। पिताजी सिक्योरिटी गार्ड थे। चार भाई-बहनों में मनीष पढ़ाई में सबसे आगे था। उसकी उम्र छोटी थी, लेकिन सपने बड़े, कुछ ऐसा करना था जो परिवार की तकदीर बदल दे।
तभी उसके स्कूल में SRI आई, एक ऐसा कार्यक्रम जो सरकारी स्कूलों के बच्चों को आवासीय विद्यालयों की परीक्षा के लिए तैयार करता है। मनीष ने चौथी कक्षा से ही तैयारी शुरू कर दी और हर मूल्यांकन में अच्छा प्रदर्शन किया।
पाँचवीं कक्षा में आते-आते एक नई परेशानी खड़ी हो गई , SRI का सेंटर उसके स्कूल से दो किलोमीटर दूर शिफ्ट हो गया। रोज़ आना-जाना मुश्किल था। रास्ते की बाधाएँ थीं, थकान थी, परेशानियाँ थीं। लेकिन मनीष ने एक दिन भी हार नहीं मानी। SRI के फेलोज़ ने उसका साथ दिया। उन्होंने न सिर्फ JNV पाने का जुनून जगाया, बल्कि सेंटर तक पहुँचने में भी मदद की। मनीष की मेहनत और फेलोज़ का सहयोग, दोनों मिलकर काम आए।
जब JNV की परीक्षा का परिणाम आया, तो मनीष ने पूरे जिले में चौथा स्थान हासिल किया था। यह सिर्फ एक परीक्षा की जीत नहीं थी, यह उस हर बच्चे की जीत थी जो कम संसाधनों में भी बड़े सपने देखता है। मनीष खुश था, परिवार खुश था, शिक्षक खुश थे, और एक सपना पूरा हो गया था।

"मान लो तो हार है, ठान लो तो जीत है।"

VOICES FROM THE FIELD

संघर्ष, बीमारी और मेहनत की जीत: भवि की कहानी

गांव सलोनी के भवि का परिवार बेहद साधारण था। पिता दर्जी का काम करते थे, माँ पास की फैक्ट्री में मजदूरी करती थीं। दोनों दिन-रात मेहनत करते ताकि बच्चों का भविष्य बेहतर हो सके। घर में पैसों की तंगी थी, लेकिन भवि के सपने बड़े थे, वह जवाहर नवोदय विद्यालय में पढ़ना चाहता था।

भवि पूरी लगन से पढ़ाई करता था। शिक्षकों के मार्गदर्शन में नवोदय प्रवेश परीक्षा की तैयारी जोरों पर थी। लेकिन तभी एक बड़ी मुसीबत आ गई| परीक्षा से कुछ महीने पहले भवि गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। दो से तीन महीने तक वह विद्यालय नहीं जा सका। जब सारे साथी तैयारी में जुटे थे, भवि घर पर बीमारी से लड़ रहा था। पढ़ाई छूट गई, सपनों पर अँधेरा छाने लगा।

लेकिन भवि ने हिम्मत नहीं हारी। तबीयत में थोड़ा सुधार हुआ तो उसने फिर किताबें उठा लीं। परीक्षा के लिए बहुत कम वक्त था, पर उसने दिन-रात एक कर दिया। माता-पिता ने हर कदम पर हौसला बढ़ाया। शिक्षकों ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी।

परीक्षा का दिन आया। भवि ने पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा दी। और जब परिणाम आया, तमाम कठिनाइयों, बीमारी और सीमित संसाधनों के बावजूद, भवि का नाम जवाहर नवोदय विद्यालय की सूची में था। पिता की आँखों में आँसू थे। माँ का सीना गर्व से चौड़ा हो गया। पूरे गाँव ने इस जीत को सराहा।

भवि की कहानी यह सिखाती है कि जब इरादा पक्का हो, तो बीमारी भी, गरीबी भी, कोई भी चीज़ सपनों को नहीं रोक सकती।

"लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत सच्ची हो, तो कोई भी मुश्किल रास्ता नहीं रोक सकती।"

WATCH BREAKING THE CYCLE: BUILDING PATHWAYS OUT OF POVERTY

IN THE NEWS

25 YEARS ANNIVERSARY समाचार क्यारी samacharkyari@gmail.com | हरियाणा | www.samacharkyari.com | नई दिल्ली | शुक्रवार, 26 जून 2026 | 3

रिलायंस के मिशन नवोदय के 49 विद्यार्थियों का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

समाचार क्यारी,संजय शर्मा ,सुनील कुमार

मॉडल इकोनॉमिक टाउनशिप (एमईटी) एवं रिलायंस फाउंडेशन द्वारा सीएसआर के माध्यम से संचालित मिशन नवोदय कार्यक्रम के अंतर्गत जवाहर नवोदय विद्यालय, कलोई (जिला झज्जर) एवं जवाहर नवोदय विद्यालय, मोहम्मदपुर, फर्रुखनगर (जिला गुरुग्राम) में चयनित विद्यार्थियों के सम्मान में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में रिलायंस एमईटी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री श्रीवल्लभ गोयल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने मिशन नवोदय कार्यक्रम की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस पहल के माध्यम से बादली विकास खंड एवं फर्रुखनगर विकास खंड क्षेत्र के विद्यार्थियों का जवाहर नवोदय विद्यालयों में चयन उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। उन्होंने इस सफलता का श्रेय मिशन नवोदय कार्यक्रम तथा इसकी सहयोगी संस्थाओं एसआरआई फाउंडेशन एवं शिक्षा रथ फाउंडेशन को दिया।

उन्होंने बताया कि झज्जर एवं गुरुग्राम जिले के 12 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में संचालित मिशन नवोदय कोचिंग कार्यक्रम के माध्यम से इस वर्ष 49 विद्यार्थियों का चयन जवाहर नवोदय विद्यालयों में हुआ है। इनमें झज्जर जिले के 38 तथा गुरुग्राम जिले के 11 विद्यार्थी शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि चयनित विद्यार्थियों में राजकीय प्राथमिक विद्यालय सौंधी से 6, लोहट से 4, मुबारिकपुर से 8, सुल्तानपुर से 3, लाडपुर से 4, याकूबपुर से 3, जहांगीरपुर से 1, दादरी टोए से 5, बादली से 4, बाढ़सा से 1 पेलपा से 3, देवरखाना से 4 विद्यार्थी शामिल हैं।

सीएसआर टीम से लोकेश कापसे ने बताया कि वर्ष 2019 से अब तक मिशन नवोदय कार्यक्रम के माध्यम से कुल 220 विद्यार्थियों का चयन विभिन्न जवाहर नवोदय विद्यालयों में हो चुका है। यह उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए इस पहल की निरंतर सफलता एवं प्रभाव को दर्शाती है।

इस अवसर पर सहयोगी संस्था एसआरआई फाउंडेशन के सुरेंद्र यादव एवं उनकी टीम को भी सम्मानित किया गया। साथ ही शिक्षा रथ फाउंडेशन की ओर से करमवीर एवं उनकी टीम को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान चयनित विद्यार्थियों को उपहार स्वरूप ट्रॉली बैग प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। साथ ही मिशन नवोदय कार्यक्रम के सफल संचालन एवं विद्यार्थियों के मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं नवोदय फेलोज को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर रिलायंस की ओर से कर्नल रोमल राजैन (सीएसआर प्रमुख), प्रशांत यादव (व्यावसायिक विकास प्रमुख) तथा सीएसआर टीम से लोकेश कापसे, नीलम सिंह, अक्षय धनखड़, संजय गुलाटी एवं चंचल उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावकों, शिक्षकों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मिशन नवोदय कार्यक्रम की सराहना की।

SRI की इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यशाला में फेलोज को मिला मार्गदर्शन

रेवाड़ी: एसआरआई (सेल्फ रिलायंट इंडिया) द्वारा नवचयनित शोधार्थी (फेलोज) के लिए आयोजित एक सप्ताह की इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यशाला में फेलोज को विद्यालय एवं समुदाय स्तर पर प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए तैयार किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य फेलोज को बच्चों के समग्र विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सीखने के स्तर में सुधार तथा समुदाय के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने की समझ और कौशल प्रदान करना है। कार्यशाला के डीसी अभिषेक मीणा ने प्रशिक्षण स्थल का दौरा किया और फेलोज से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने फेलोज द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में फेलोज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे विद्यालय और समुदाय के बीच एक मजबूत सेतु के रूप में कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, क्षमता और आवश्यकता अलग-अलग होती है। इसलिए शिक्षण कार्य करते समय बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सीखने की चुनौतियों और उनकी भिन्नताओं को ध्यान में रखना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि यदि शिक्षक और फेलो प्रत्येक बच्चे तक पहुंच बनाकर उसकी जरूरतों के अनुसार सहयोग प्रदान करें, तो शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर और स्थायी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। डीसी ने कहा कि कक्षा में केवल सामूहिक शिक्षण तक सीमित रहने के बजाय बच्चों की व्यक्तिगत प्रगति पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। बच्चों की क्षमताओं और चुनौतियों को समझकर बनाई गई शिक्षण योजना न केवल उनके सीखने के स्तर में सुधार लाती है, बल्कि उनके आत्मविश्वास, सहभागिता और आगे बढ़ने की इच्छा को भी मजबूत करती है।

सीखने की चुनौतियों पर कार्यशाला

जागरण संवाददाता, रेवाड़ी: सामाजिक संगठन सेल्फ रेलिएंट इंडिया (एसआरआइ) द्वारा जाट धर्मशाला में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भावी शिक्षकों को बच्चों के समग्र विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, और सीखने के स्तर में सुधार के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना है। इसमें रेवाड़ी के साथ उत्तर प्रदेश और राजस्थान से लगभग 50 प्रतिभागी शामिल रहे। एसआरआइ सरकारी शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण सीखने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए कार्यरत है। संस्था का नन्हे कलाम फेलोशिप माडल स्थानीय युवाओं को फेलो के रूप में तैयार करता है, जो सरकारी विद्यालयों में बच्चों के साथ कार्य करते हैं। 13 जून तक चलने वाली इस कार्यशाला में उपायुक्त अभिषेक मीणा ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे विद्यालय और समुदाय के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। उन्होंने बच्चों की आवश्यकताओं और सीखने की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य पर जोर दिया।

शिक्षा के क्षेत्र में शोधार्थियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण

हरिभूमि न्यूज ▸▸ रेवाड़ी

एसआरआई (सेल्फ रिलायंट इंडिया) की ओर से नव चयनित शोधार्थियों के लिए आयोजित एक सप्ताह की इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यशाला में फेलोज को विद्यालय एवं समुदाय स्तर पर प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए तैयार किया जा रहा है। प्रशिक्षण का उद्देश्य फेलोज को बच्चों के समग्र विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सीखने के स्तर में सुधार तथा समुदाय के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने की समझ और कौशल प्रदान करना है। डीसी अभिषेक मीणा ने वीरवार को प्रशिक्षण स्थल का दौरा किया और फेलोज से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में फेलोज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे विद्यालय और समुदाय के बीच एक मजबूत सेतु के रूप में कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, क्षमता और आवश्यकता अलग-अलग होती है। इसलिए शिक्षण कार्य करते समय बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सीखने की चुनौतियों और उनकी भिन्नताओं को ध्यान में रखना बेहद जरूरी है।

कक्षा में केवल सामूहिक शिक्षण तक सीमित रहने के बजाय बच्चों की व्यक्तिगत प्रगति पर दें विशेष ध्यान

डीसी ने कहा कि कक्षा में केवल सामूहिक शिक्षण तक सीमित रहने के बजाय बच्चों की व्यक्तिगत प्रगति पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। बच्चों की क्षमताओं और चुनौतियों को समझकर बनाई गई शिक्षण योजना न केवल उनके सीखने के स्तर में सुधार लाती है, बल्कि उनके आत्मविश्वास, सहभागिता और आगे बढ़ने की इच्छा को भी मजबूत करती है। एसआरआई पिछले कई वर्षों से सरकारी शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने, वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण सीखने के अवसर उपलब्ध कराने तथा उन्हें जवाहर नवोदय विद्यालय, एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल, सैनिक स्कूल जैसे उत्कृष्ट सरकारी आवासीय विद्यालयों तक पहुंचाने के लिए कार्य कर रहा है। कार्यशाला के दौरान फेलोज को बच्चों के साथ प्रभावी संवाद, कक्षा प्रबंधन, सीखने के स्तर की पहचान, पाठ योजना, समुदाय से जुड़ाव, अभिभावक बैठक, मूल्यांकन एवं री-टीचिंग जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

रेवाड़ी। कार्यशाला में शोधार्थियों के साथ डीसी अभिषेक मीणा। फोटे : हरिभूमि

SEE YOU NEXT QUARTER!

Expanding Our Reach:
Operations will commence in 13 districts of Uttarakhand, extending our impact to new communities.

Quarterly Board Meeting:
Our Board will convene in August to review progress and set strategic priorities for the year ahead.

Website Revamp:
We're revamping the Self Reliant India website to offer a better, more accessible experience for our supporters and partners.

WHAT'S UPCOMING?

To keep yourself updated about or work, you can **follow us on:**